प्राचीन स्थल
भानगढ़

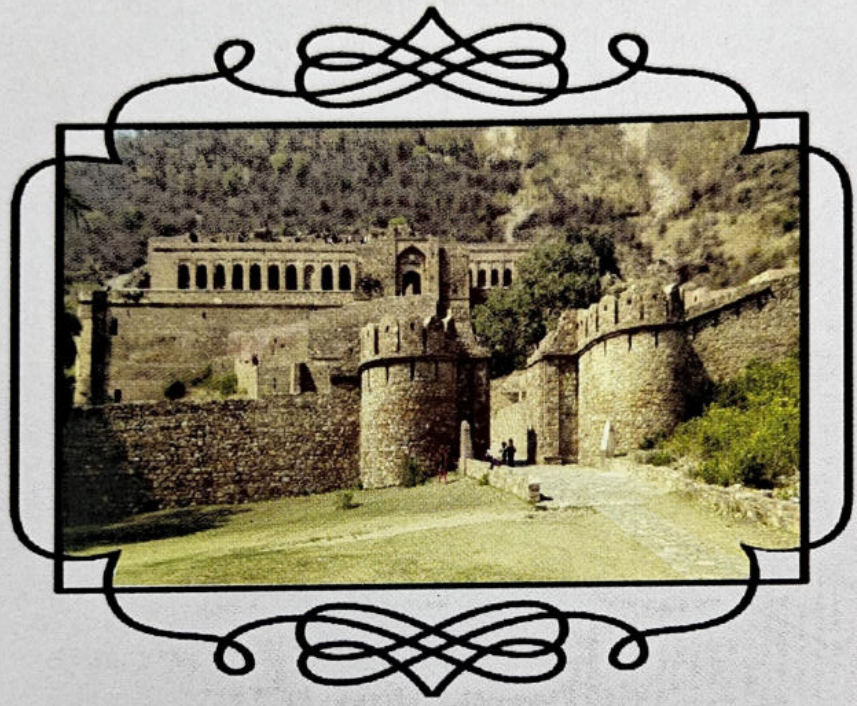

सत्यमेव जयते

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर
2019

प्राचीन स्थल
भानगढ़

भानगढ़ (27° 5' 44.87" N, 76° 17' 15.62 E) अलवर जिले की राजगढ़ तहसील में जिला मुख्यालय से 100 किलोमीटर दक्षिण में तथा दौसा (राष्टीय राजमार्ग संख्या 11, जयपुर–आगरा मार्ग) से 25 कि.मी. उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल बाणगंगा की एक सहायक नदी सांवा के दाहिने तट पर बसा है। अरावली पर्वतमाला इस जनपद के ठीक मध्य में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है। भानगढ इसी पर्वतश्रेणी की एक घाटी में घने वृक्षों से आच्छादित पुरास्थल है।

प्राचीन स्थल भानगढ़ में प्रागैतिहासिक काल से लेकर उत्तरमध्यकाल तक की मानवीय गतिविधियों के प्रमाण मिलते हैं। पुरातात्विक अन्वेषणों के दौरान इस क्षेत्र में पाषाण युग के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां सावां नदी के तट पर स्व. श्री एस.के. सौन्दरराजन ने पुरापाषाण कालीन उपकरणों की खोज की थी।

भानगढ़ में पहली बसावट आमेर के राजा मान सिंह (उर्फ भान सिंह) के समय में हुई थी। उसके उत्तराधिकारी महाराजा भगवानदास ने सन् 1599 ई0 में अपने द्वितीय पुत्र माधोसिंह को वहां भेजा । माधोसिंह ने एक शहर की स्थापना की तथा अपने पितामह राजा भान सिंह के सम्मान में उक्त स्थल का नाम भानगढ़ रखा। यह स्थल उस समय के एक प्रसिद्व नगर के रूप में विकसित हुआ। माधो सिंह को राजा मानसिंह का छोटा भाई बताया जाता है। मुगल सम्राट अकबर के शासन काल में

माधोसिंह को दो हजार की मनसब प्रदान की गयी थी। इस स्थल से पांच किलोमीटर दूर पहाड़ी पर एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि माधोसिंह मुगल सम्राट अकबर के दरबार में दीवान थे। माधोसिंह के पश्चात उसके उत्तराधिकारी इस क्षेत्र पर शासन करते रहे। सन् 1720 ई0 में जयपुर के सवाई राजा जयसिंह ने भानगढ़ को अपनी सीमा में मिला लिया।

भानगढ़ के पतन एवं वीरान हो जाने के संबंध में कई धारणाएं प्रचलित हैं। इनमें से एक यह है कि सवाई जयसिंह के जागीरदारों द्वारा लगातार किये जाते रहे आक्रमणों के कारण यह स्थल निर्जन हो गया। लेकिन सर्वाधिक संभावना इस बात की है कि लम्बे समय तक सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा के कारण इस स्थल पर पानी की कमी हो गयी। भू–आकृति की दृष्टि से देखें तो भानगढ़ एक अत्यन्त सुरम्य प्राकृतिक स्थल है। दो पहाडियों के मध्य स्थित एक गहरे भाग से एक झरना प्रस्फुटित होता है जिससे निकलने वाला जल नीचे बने एक कुण्ड में जमा होता है। दुर्ग के भीतर रहने वाली आबादी के लिए यही कुण्ड जल का एक मात्र स्रोत था और

सम्भवतः सूखा या अत्यल्प वृष्टि जैसे कतिपय कारणों से यह कुण्ड लगातार कई वर्षों तक जलहीन पड़ा रहा। परिणामस्वरूप यहाँ रहने वाले लोग पलायन को मजबूर हो गये।

अन्वेषण एवं मलबों की सफाई से स्पष्ट हैं कि भानगढ़ के ध्वंसावशेष U आकार की पहाड़ियों के मध्य स्थित एक घाटी मे लगभग 158 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैले हुए हैं। अपने उत्कर्ष के दिनों में यह शहर विशाल रक्षा–प्राचीर, प्रवेश–द्वारों, विविध प्रकार के बाजारों, दो एवं तीन मंजिल की हवेलियों, मन्दिरों, राजमहल, मस्जिद, मकबरे, सैनिक–निवास, सार्वजनिक स्थलों यथा बाग–बगीचे, सडक, गलियो, पुल तथा उंचाई पर चढ़ने हेतु सोपानों से युक्त था।

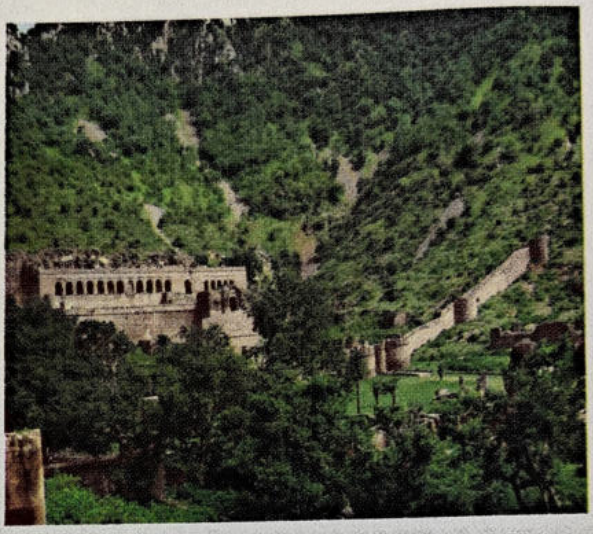

भानगढ़ की स्थिति कुछ ऐसी है कि एक सीधी प्राचीर के बन जाने से यह किलेबन्द हो जाती है क्योंकि शेष तीन ओर से यह उंची पहाड़ियों से घिरी है। यहाँ कुल तीन रक्षा–प्राचीर हैं जो पूरे आवास क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित कर देती है। प्रत्येक रक्षा प्राचीर पूर्व में स्थित पहाड़ी से लेकर पश्चिम स्थित पहाड़ी तक विस्तृत है। पहली रक्षा प्राचीर में कुल पांच प्रवेश द्वार हैं जो क्रमशः अजमेरी द्वार, दिल्ली द्वार, लोहागढ़ द्वार, लाहौरी द्वार एवं हनुमान द्वार के नाम से जाने जाते हैं। पाषाण खण्डों से बनी यह प्राचीर लगभग 4.5 मीटर उंची तथा चौड़ाई लगभग 4.00 मीटर है। इस समय इस स्थल का मुख्य प्रवेश हनुमान द्वार से होकर है। कतिपय आवासीय भवनों के ध्वंसावशेषों से ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस प्राचीर की दीवार से लगकर बनाये गये थे। इसके अतिरिक्त लौहमल के विशाल ढेर, जो प्राचीर के बाहर एवं भीतर दोनों तरफ विद्यमान हैं, से ऐसा संकेत मिलता है कि संभवतया ये आवास लोहे के कार्य करने वाले कारीगरों के थे। पहली रक्षा प्राचीर से आगे बढ़ने पर क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय प्राचीर का प्रावधान है।

इस स्थल के सुदूर पश्चिमी भाग में पहाडी के ढलान पर राजमहल स्थित है जिसमें तृतीय प्राचीर में बने एक द्वार से होकर प्रवेश की व्यवस्था है। यह सम्पूर्ण महल परिसर गढ़ित पाषाण खण्डों एवं चूने के मसाला द्वारा मुगल शैली में बना है। यह महल कई स्थानों से खण्डित हो चुका था जिसका संरक्षण एवं परिरक्षण विगत कुछ वर्षों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया गया है। इस महल के कुछ कक्षों में सुन्दर चित्रकारी द्वारा वानस्पतिक एवं ज्यामितिक अभिप्रायों को अंकित किया गया है।

इस प्राचीन शहर में अनेकानेक हवेलियाँ एवं व्यक्तिगत आवासीय परिसरों के

ध्वंसावशेष बिखरे पड़े हैं जिनमें से कुछ प्रमुख हैं :– मोढों की हवेली, नर्तकियों की हवेली, खैनी वालों की हवेली, पुरोहितजी की हवेली आदि।

मोढों की हवेली :– यह दो मंजिला भवन जौहरी बाजार के ठीक निकट स्थित है। इस भवन पर चूने का प्लस्तर चढ़ाया गया है। कई स्थानों पर तो चूने के विशिष्ट चमकदार लेप का कार्य भी किया गया है। इस भवन के आन्तरिक भागों में विभिन्न वानस्पतिक एवं ज्यामितिक अभिप्राय वाली चित्रकारी की गयी है। एक आंगन एवं बरामदे के साथ इस भवन की योजना में कुल छः कमरों का प्रावधान है।

खैनी वाली हवेली :– मुख्य बाजार के बायें भाग में स्थित यह हवेली एक तीन मंजिला भवन है जिसके निर्माण में अनगढित पत्थरों का प्रयोग करते हुए चूने मे चिनाई की गयी है। इसके आन्तरिक भाग में विविध रंगों द्वारा वानस्पतिक एवं ज्यामितिक अभिप्रायों की सुन्दर चित्रकारी की गयी है। तितलियों एवं अन्य अलंकरण अभिप्रायों को उकेरा गया है। इस भवन का निर्माण सम्भावतः व्यापारियों के निवास हेतु किया गया था।

नर्तकियों की हवेली :– मोढों की हवेली से लगभग 50 मीटर पूर्व में एक तीन मंजिला झरोखेदार भवन स्थित है जिसे स्थानीय तौर पर ''रंडियों की हवेली'' के नाम से जाना जाता है। इस भवन/हवेली का निर्माण संभवतया सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए किया गया था।

पुरोहितजी की हवेली :– सोमेश्वर मंदिर के पूर्व में स्थित यह हवेली तीन मंजिला है जिसके निर्माण में अनगढ़ित पत्थरों का प्रयोग एवं चूने मे चिनाई की गयी है। इससे जुड़े अन्य ध्वंसावशेषों को देखने से यह प्रतीत होता है कि यह एक विशाल आवासीय परिसर था जो संभवतः मुख्य पुजारी के आवास हेतु बनवाया गया था। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि यही एक मात्र आवासीय भवन है जो द्वितीय परकोटे के अन्दर स्थित है।

मन्दिर :–

भानगढ़ में कुल चार मंदिर हैं– गोपीनाथ मंदिर, केशवराय मंदिर, मंगलादेवी मंदिर एवं सोमेश्वर मंदिर। उक्त सभी मंदिर नागर शैली में बने हैं।

गोपीनाथ मंदिर :– द्वितीय रक्षा प्राचीर के मुख्य द्वार से प्रवेश के पश्चात् मार्ग के दायें भाग में यह मंदिर स्थित है। भानगढ़ स्थित सभी मंदिरों में यह योजना तथा विन्यास की दृष्टि से सबसे विशाल है। यहां स्थापित प्रतिमाएं भी अत्यन्त कलात्मक हैं। यह पूर्वाभिमुख मंदिर एक उंचे अधिष्ठान पर बना है जिसमें प्रवेश हेतु सामने की ओर से सौपान बने हैं। प्रवेश मण्डल में कक्षासन की व्यवस्था है। इसका सभामण्डप वर्गाकार है जिसके ऊपर गुम्बदनूमा छत का प्रावधान है। इसके अन्तराल के दो ताकों में गणेश एवं शिव–पार्वती की प्रतिमा लगी है। मन्दिर का गर्भग्रह रिक्त है तथा मन्दिर में अब कोई पूजा अर्चना नहीं होती है। इसका निर्माण लगभग 17वीं सदी में किया गया था।

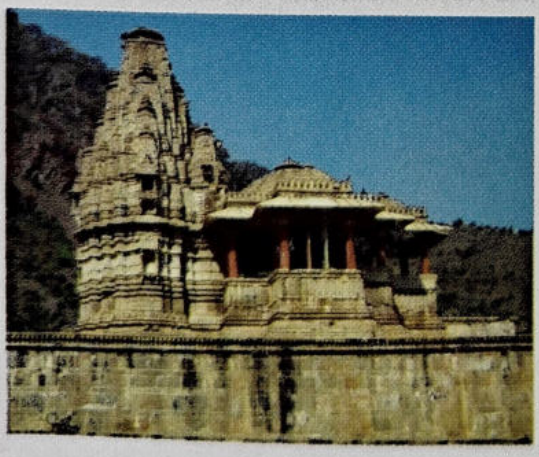

सोमेश्वर मंदिर :– राजमहल के निकट इसके दक्षिण पूर्व में स्थित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर भी एक ऊंचे अधिष्ठान पर बनाया गया है। यह एक पंचायतन प्रकार का मंदिर है इसके चारों कोने में स्थित लघु देवालयों का स्थान अब रिक्त पड़ा है। यह मंदिर अलंकरणविहीन है तथा इसमें कक्षासन भी नहीं है। उरूश्रृंगों से युक्त शिखर पर चूने का पलस्तर चढ़ाया गया है स्तम्भयुक्त मंडप वाला यह मंदिर

पूर्वाभिमुख है।

केशवराय मंदिर :– सोमेश्वर मंदिर के दक्षिण पूर्व में यह मन्दिर स्थित है। एक ऊंचे अधिष्ठान पर स्थित इस मंदिर हेतु अलग से प्रकार भित्ति निर्मित है इस मंदिर में भी किसी तरह का अलंकरण नहीं है। योजनानुसार इसमें एक स्तम्भयुक्त मण्डप, अन्तराल तथा गर्भग्रह सम्मिलित है। गर्भग्रह अब खाली पड़ा है।

मंगलादेवी मंदिर :– केशवराय मंदिर के ठीक सामने एक ऊंचे टीले पर यह मंदिर स्थित है। यह देवी मंगला को समर्पित है तथा पूर्वाभिमुख है। इस मंदिर में एक अर्ध मण्डप, मण्डप, अन्तराल तथा गर्भग्रह की योजना है। मण्डप के स्तम्भ शीर्षों पर कीचक बने है। गर्भग्रह का द्वार चौखट संगमरमर का बना है। इस पर स्त्री अनुचारों एवं द्वारपालों को दिखाया गया है। द्वार के ललाटबिंब पर गणेश की प्रतिमा विराजमान है। गर्भग्रह में मुख्य देवता का स्थान खाली है। यह मन्दिर भी लगभग 17वीं सदी या उसके कुछ पहले का बना प्रतीत होता है।

अन्य संरचनाएं

1. **मकबरा** :– प्रथम रक्षा प्राचीर के ठीक बाहर स्थित यह सुन्दर एवं भव्य मकबरा हनुमान द्वार के निकट है। एक ऊंचे अधिष्ठान पर निर्मित इस मकबरे में प्रवेश हेतु इसके दक्षिण भाग में सौपान का प्रावधान है। भानगढ़ के सभी इमारतों में यह सर्वाधिक सुरक्षित स्मारक है। इस पर प्रयुक्त चूने का लेप आज भी अपनी चमक बनाये हुए है। इसके अन्दरूनी भाग में सामान्य ज्यामितिय प्रतिरूप के चित्र बनाये गये है। यह इमारत हमें मुगल इमारतों की याद दिलाती है।
2. **"वाच टावर" या "निगरानी चौकी"** :–पहाड़ी की चोटी पर एक वाच टावर या निगरानी चौकी निर्मित है। यहां से सम्पूर्ण आवासीय परिसर एवं भानगढ़ कें दूर–दराज के क्षेत्रों पर आसानी से निगरानी रखी जा सकती है।
3. **बाजारः**– हनुमान द्वार से लगभग 40 मीटर आगे राजमहल को जाने वाले मुख्य मार्ग के दोनों ओर बडी संख्या में दुकानों का निर्माण किया गया है। ये सभी दुकाने समय के साथ मिट्टी के ढेर के नीचे दब गयी थी जिसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने वैज्ञानिक अनावरत कर संरक्षित एवं परिरक्षित करने का कार्य विगत कुछ वर्षों में किया है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र मुख्य बाजार के नाम से जाना जाता है। एक मंजिल तथा दो मंजिल वाली इन दुकानों की कुल संख्या लगभग 140 हैं। ये सभी दुकाने अनगढित पाषाण खण्डों तथा चूने के मसाले द्वारा निर्मित हैं। मुख्य बाजार से ठीक पूर्व में दिल्ली द्वार की ओर बढने पर मार्ग पर अन्य कई दुकानों के ध्वांसावशेष है जो संभवतः आभूषणों के कार्य करने वाले कारीगारों के हैं जिसके कारण इसे जौहरी बाजार के नाम से जाना जाता है। विगत कुछ वर्षों में इस क्षेत्र को अनावृत कर संरक्षित एवं परिरक्षित करने का कार्य किया गया है। उक्त सभी दुकाने अनगढित पाषाण खण्डों से निर्मित है तथा इसके उपर भी चूने का पलस्तर किया गया है।

उपरोक्त वर्णित महलों, हवेलियों तथा मंदिरों के अतिरिक्त भी प्राचीर के बाहर कई आवासीय ध्वंसावशेष, कुएं, छतरियां तथा कब्र स्थित है।

प्राचीन स्थल–भानगढ़

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

उ→

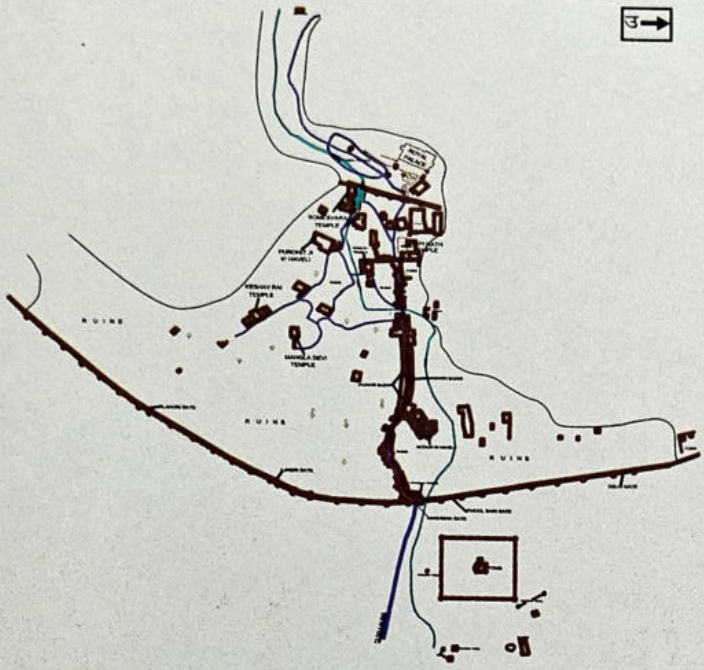

भ्रमण समय

प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक

प्रवेश शुल्क

	नगद	आनलाईन
भारतीय :	रू : 25.00	20.00
विदेशी :	रू : 300.00	250.00

15 वर्ष से कम उम्र के बच्चो के लिए निः शुल्क प्रवेश

'आइये हम संकल्प लें कि हम अपनी धरोहर का सम्मान करेगे, इसे सुरक्षित रखेंगे एवं मूल स्वरुप में इसे अपनी भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित कर अपने दायित्व का समुचित निर्वहन करेंगे।'

पी.एल. मीणा

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

70/133,140, पटेल मार्ग,"कैलाश" मानसरोवर, जयपुर.302020

फोन: 0141 2396523 ई. मेल: circlejaipur.asi@gov.in